

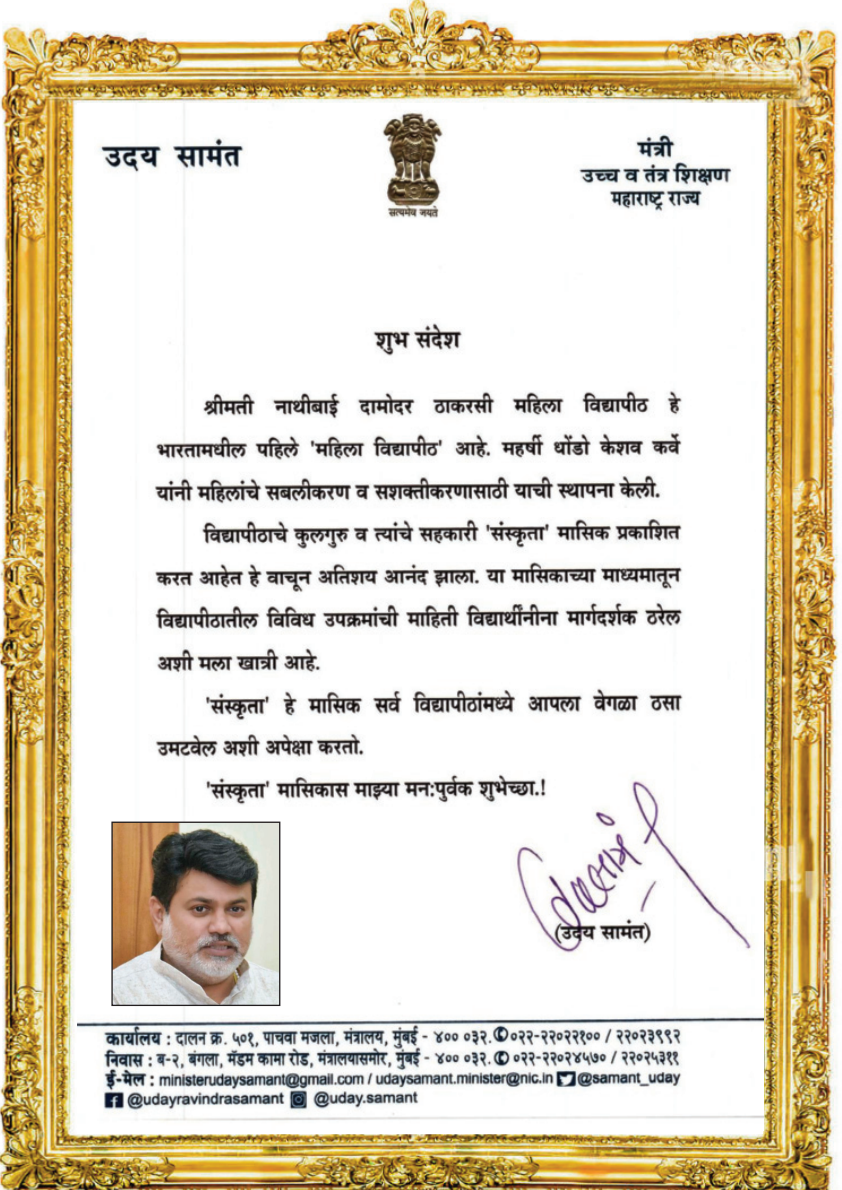
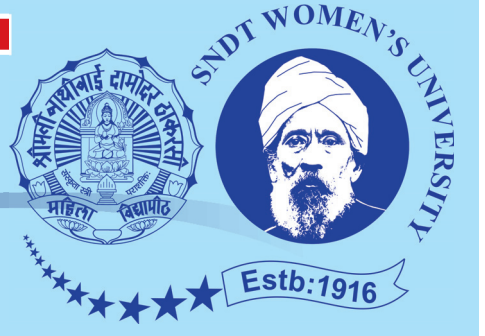


An Enlightened Woman

संस्कृता

Volume: 1 Issue: 1

March-2022



सं पा द की य

संस्कृता : एक नवीन सुरुवात

एक मुलगी शिकली तर संपूर्ण घर शिक्षित होतं असं म्हणतात... हाच मनसुबा बाळगून एकशे सहा वर्षापूर्वी, भारतरत्न डॉ. महर्षी धोंडो केशव कर्वे यांनी एसएनडीटी महिला विद्यापीठाची स्थापना केली. महिलांना शिक्षित करून त्यांचे सबलीकरण करणे हा त्यांचा हेतू आज शंभर वर्षांनंतर देखील विद्यापीठाच्या विद्यमान कुलगुरु डॉ. उज्वला चक्रदेव यांच्या मार्गदर्शनाखाली पूर्णत्वास जाताना दिसत आहे. विद्यापीठातील अनेक उपक्रम, विविध कार्ये तसेच विद्यार्थिनींचे यश, प्राध्यापकांचे यश हे लोकांपर्यंत पोहोचविण्यासाठी विद्यापीठाला स्वतःचे हक्काचे व्यासपीठ असावे, या हेतूने कुलगुरु डॉ. उज्वला चक्रदेव यांच्या संकल्पनेतून विद्यापीठाचे स्वतःचे एक बातमीपत्र असावे... ही संकल्पना उदयास आली आणि येथूनच सुरु झाला संस्कृताचा प्रवास... ज्याद्वारे विद्यापीठाचे कार्य सर्वदूर पोहोचेल व एक महिला शिक्षणाची चळवळ निर्माण होईल. पहिल्यांदा सुरु होणाऱ्या या बातमीपत्राला काय नाव द्यायचे असा विचार सुरु असताना, प्र-कुलगुरु डॉ. रुबी ओझा यांनी 'संस्कृता' हे नाव सुचविले त्या नावामागची कहाणी म्हणजे एसएनडीटी महिला विद्यापीठाचे प्रेरक गीत संस्कृता स्त्री पराशक्ति... ही ओळ... आणि तेथून 'संस्कृता' या बातमीपत्राचा उगम झाला आणि त्या नावाला सगळ्यांनी एक मुखाने होकार भरला.

कुलगुरु डॉ. उज्वला चक्रदेव यांनादेखील नाव पसंत पडले. महिलांचे सबलीकरण आणि सक्षमीकरण करण्यासाठी स्थापन केलेल्या या विद्यापीठामधून 'संस्कृता' या नावाने मासिक प्रकाशित करायचे ठरल्यावर सगळेच मनापासून कामाला लागले. त्या अनुषंगाने मराठी, हिंदी, इंग्रजी, गुजराती आणि संस्कृत या पाचही भाषांमधील मजकुराचा समावेश या मासिकामध्ये करण्याचे ठरले. त्यासाठी पदव्युत्तर विभागांमधून, महाविद्यालयांमधून बातम्या, उपक्रमाची माहिती मागविण्यात आली. आपण सगळेच जाणतो की, भारतीय संस्कृती ही प्राचीन संस्कृती म्हणून जगभर प्रसिद्ध आहे. मानव विकासाबरोबर, भाषांचा देखील विकास होत गेला. त्यामुळे राष्ट्राच्या विकासांमध्ये भाषा-संस्कृतीचा मोठा वाटा असल्याचे मानले जाते. हे जाणून की काय, 'राष्ट्रनिर्माण मे भारतीय भाषाओं की भूमिका' याबद्दल विद्यापीठामध्ये राष्ट्रीय कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात येणार आहे. त्यासाठी महाराष्ट्र राज्याचे महामहिम राज्यपाल तथा कुलपती श्री. भगतसिंग कोश्यारी हे प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित राहणार आहेत. भाषेच्या महतीचा कार्यक्रम आणि त्याचे राष्ट्रनिर्मितीमध्ये असलेले अढळ स्थान या पार्श्वभूमीवर, याच कार्यक्रमांमध्ये 'संस्कृता' मासिकाचा पहिला अंक प्रदर्शित करण्याचे ठरले. एसएनडीटी परिवारातील उपक्रम, घटना, यासह अनेक शैक्षणिक उपक्रमांची माहिती आता सर्वदूर पोहोचेल याचा आम्हाला आनंद होत आहे.

सुसंस्कृत, आणि स्वाभिमानी 'संस्कृता' आता दर महिन्याला तुम्हा सर्वांना भेटणार आहे. पहिलाच अंक असल्याने, अनावधानाने काही उणीव राहण्याची शक्यता आहे. त्याबद्दल आपण आम्हाला माफ करून 'संस्कृता'ची वाटचाल यशस्वी करण्यासाठी सूचना आणि मार्गदर्शन करत राहाल अशी अपेक्षा आम्ही व्यक्त करत आहोत. यापुढे प्रत्येक अंकामध्ये तुम्हाला 'विविधता मे एकता' पाहायला मिळेल त्याबद्दल आम्ही ग्वाही देतो. ❀ टीम संस्कृता

EDITORIAL BOARD MEMBERS

Dr. Subhash Chavan

Dr. Sunita Sakhare

Dr. Mira Desai

Dr. Sachin Deore

Dr. Nilesh Thakare

Dr. Aruna Dubhashi

Dr. Rajendra Gurao

Dr. Darshana Oza

Dr. Jitendra Tiwari

Dr. Jaswandi Wamburkar

Dr. Dhruvadi Chattopadhyay

TECHNICAL ASSISTANT:

Mr. Balu Rathod

Ms. Harshada Vedpathak

Mr. Mehul Khale

संस्कृता: विविध पैलूंचे प्रतिबिंब

“संस्कृता स्त्री पराशक्ति” हा स्वर आमचा. भारतरत्न महर्षी डॉ. केशव कर्वे यांच्या तपश्चर्येतून जन्मलेल्या या तळपत्या सूर्याच्या प्रकाशात तुमच्या माझ्या सारख्या कोटी कोटी अबला, सामर्थ्याच्या उंच उंच शिखरांवर पोहोचू शकल्या आहेत. एक शतक, हा काही फार मोठा काळ नाही, एसएनडीटी महिला विद्यापीठासारख्या प्रचंड उर्जा आणि संकल्पांचा महामेरू असलेल्या संस्थेसाठी. ठाकरसींच्या स्वप्नांची पूर्ती करण्यास्तव आणि स्त्रीची सबलता पूर्णत्वास नेण्यासाठी एसएनडीटी महिला विद्यापीठाला अजून खूप खूप शतकांचे आयुष्य लाभणार, लाभत राहणार.

‘संस्कृता’ तिच्या चिर तारुण्याच्या उत्साही विविध पैलूंचे प्रतिबिंब आहे. विविधतेने नटलेल्या एसएनडीटी महिला विद्यापीठाच्या अंगारवांदावर जोपासलेल्या तेजपुंज अभ्यासक्रमांसोबत क्रीडा, वक्तृत्व, आधुनिक काळातील चढाओढींशी सामना करायची शक्ती, दुर्गम भागातील स्त्रीशक्तीला दिलेला मायेचा हात, परदेशी दुरदेशी भारतातेचा सन्मान उंचावण्याच्या संधी अशा आणखी अनेकानेक सुवर्ण रेखांनी रंगवलेलं एक महाचित्र या ‘संस्कृता’ मार्फत आपल्यापर्यंत पोहोचणार आहे. पराशक्तीच्या आशीर्वादाने बळकट बाहू सातत्याने एसएनडीटी महिला विद्यापीठाला सावरत आले आहेत आणि पुढेही राहतील.

आपल्या स्वराच्या माधुर्यात संपूर्ण जगताला न्हाहून निघू दे. निसर्गाचा गोडवा आणि सहजता संपूर्ण विश्वाच्या कल्याणाचे कारण बनू दे.

तुम्ही आणि मी आपल्या स्वप्नांचे पंख पसरून आकाशात उंच भरावी मारावी म्हणून सदैव तत्पर अशा या आशीर्वादाच्या अभीर वचनात ही एसएनडीटी महिला विद्यापीठ सदैव राहू दे, हीच ईश्वर चरणी मनापासून प्रार्थना.

❁ डॉ. उज्वला चक्रदेव
(कुलगुरु, एस.एन.डी.टी. विद्यापीठ)



एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय से मुझे स्त्री-विमर्श पर लेखन करने की प्रेरणा मिली

सुप्रसिद्ध लेखिका चित्रा मुद्गल का साक्षात्कार



चित्रा मुद्गल हिंदी कथा साहित्य की वरिष्ठ लेखिका है। उन्हें २००३ में ‘आवां’ उपन्यास के लिए ‘व्यास सम्मान’ मिला तथा सन् २०१८ का हिंदी भाषा का ‘साहित्य अकादमी पुरस्कार’ ‘पोस्ट बॉक्स नं. २०३ नाता सोपारा’ उपन्यास पर मिला। चित्राजी हमारे एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई की पूर्वछात्रा रही। उन्होंने १९७२ में हिंदी से एम.ए. किया। हिंदी विभाग की स्थापना भी १९७२ में हुई थी और वह प्रथम पीठ की छात्रा रही है। हमें गर्व है कि चित्राजी जैसी वरिष्ठ, प्रतिष्ठित साहित्यकार हमारे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की छात्रा है। प्रस्तुत है साक्षात्कार के कुछ अंश -

प्रश्न. चित्राजी आपने मुम्बई विश्वविद्यालय से बी.ए. किया, तो एम.ए. एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय से करने का विचार क्यों आया ?

उत्तर - महर्षि कर्वे द्वारा स्थापित एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय हम जैसी बाल-बच्चों वाली महिलाओं को पढ़ने की सहूलियत देता है। यहाँ फीस भी कम थी। मैं अपने बच्चों के साथ रोज-रोज कक्षा में जाकर बैठ नहीं सकती थी। मुम्बई वि.वि. में दूरस्थ शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी। एस.एन.डी.टी. में ये सुविधा थी। २७ रुपए फीस में हमारे घर पर पोस्ट से पाठ्यक्रम से संबंधित नोट्स भी आ जाया करते थे। मैं एस.एन.डी.टी. महिला वि.वि. की तत्कालीन कुलगुरु माधुरी बेन शाह और विश्वविद्यालय की आजीवन आभारी रहूँगी कि उन्होंने हिंदी विभाग खोला वरना हमारी जैसी महिलाएँ आगे की पढ़ाई कर ही नहीं सकती थी।

प्रश्न. एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय से एम.ए. करने पर आपने क्या सीखा ?

उत्तर - मुझे गर्व है कि मैंने महर्षि कर्वे द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। यहाँ पढ़ने के दौरान मेरे अंदर महिलाओं के प्रति मेरे दृष्टिकोण में और मेरे लेखन में बदलाव आया। पितृसत्तात्मक समाज महिलाओं को मात्र देह व उपभोग की वस्तु मानता है। समाज में स्त्री की दोगम दर्जे की स्थिति रही है। समाज स्त्री का तिरस्कार और उसकी उपेक्षा कर रहा है। समाज में स्त्री को जो मानवीय दर्जा मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला है। वह देवी और भोग्या के बीच पेंडुलम की स्थिति में सदियों से जीती रही है। उन्हें मानवीय रूप में प्रतिष्ठित करने का काम महर्षि कर्वे ने किया। शिक्षा के माध्यम से उन्होंने स्त्रियों में आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता जागृत की। इस विश्वविद्यालय से मुझे स्त्री-विमर्श पर लेखन करने की प्रेरणा मिली।

प्रश्न. आपके अनुसार स्त्री-विमर्श क्या है ?

उत्तर - मेरे अनुसार स्त्री-विमर्श का अर्थ है समाज में उस आधी दुनिया के विषय में सोचा जाना, जो अपनी साझेदारी उपस्थिति से उसे एक संतुलित और मुकम्मल दुनिया का स्वरूप प्रदान करती है। लेकिन दुर्भाग्य से स्त्री को अपना सर्वस्व स्वाहा करने के बावजूद भी संतुलित मुकम्मल जहां नसीब नहीं हो पाता। पितृसत्ता द्वारा निर्मित उन अमानवीय स्थितियों के बारे में सोचा जाना, विचार किया जाना तथा मानवीयता के नाते इस बात का समाज को एहसास होना चाहिए कि अपनी वर्चस्वता कायम करने हेतु आधी दुनिया के साथ मानसिक, दैहिक, सामाजिक, राजनैतिक,

आर्थिक, व्यावहारिक सभी स्तरों पर व्यभिचार किया जाता आ रहा है। दरअसल पुरुष भूल गया है कि स्त्री के सीने में भी एक अदद दिल है। उसके धड़ के ऊपर के हिस्से में दिमाग है जो किसी भी मायने में पुरुष के दिमाग से कम ऊर्जावान नहीं है। ये विसंगतियाँ, ये मुद्दे हैं, जिनके बारे में स्त्री-विमर्श के माध्यम से गहराई से समाज का विश्लेषण किया जाना चाहिए। स्त्री के संदर्भ में स्त्री-विमर्श के मायने प्रतिरोध का स्वर है, जो उसके सामाजिक उत्पीड़न को लेकर उठाय गया।

प्रश्न. स्त्री रचनात्मकता के बावजूद स्त्री उपेक्षित क्यों है ?

उत्तर - जब पुरुष अपने अहम् को त्यागेगा, तभी स्त्री रचनात्मकता की कद्र होगी। जहाँ इस तरह का भाव होगा कि हर चीज चलाने का आधार पुरुष के पास है चाहे घर हो, समाज हो, देश या राष्ट्र हो, तो वहाँ स्त्री की रचनात्मकता को कहाँ जगह मिलेगी? यही साहित्य में दिखेगा। हमारे आलोचकों ने स्त्री लेखन को ‘जनाना लेखन’ कहकर बहुत मजाक उड़ाया है। मैं तो कहती हूँ उन पुरुषों की कुव्वत ही नहीं है स्त्री लेखन को पहचानने की। आधी दुनिया अपनी सृजनात्मकता के माध्यम से लिख रही है और अपने अंतर्मन की तलहटों को अभिव्यक्त कर रही है। स्त्री एक ऐसा पहिया है जो अपनी कील से उखड़ चुकने के बावजूद गाड़ी की गति के साथ घिसट रही है और पुरुष उस ‘घिसटन’ का कोई इलाज करने के बजाय उसे निकालकर हाशिये पर फेंक रहा है।

प्रश्न. आपके कथा साहित्य में स्त्री पात्र किस तरह संघर्ष करती है ?

उत्तर - मेरे कथा साहित्य में जितने भी स्वर के स्त्री विमर्श हो सकते हैं और जितनी भी जटिलताएँ हो सकती हैं, मैंने नारी पात्रों की सृष्टि कर उजागर किया है। सबसे पहले तो स्त्री देहधर्म पहचान के बदले अपनी बौद्धिकता और मानवीय पहचान बनाती है। स्त्री मुक्ति के रास्ते में आने वाली परिस्थितियों से संघर्ष करती है। विसंगतियों से जुझते-टकराते और विषाद, दुःख, तनाव, निराशा, अवसाद, द्वंद्व जैसी अवस्थाओं पर विजय प्राप्त करते हुए अपनी अस्मिता की पहचान करते हुए पाठकों के लिए प्रेरणा स्रोत बनती है।

धन्यवाद.

साक्षात्कारकर्ता

❁ श्रीमती कुसुम त्रिपाठी,
अतिथि प्राध्यापक
हिंदी विभाग, एस.एन.डी.टी.

संस्कृता के आँगन में सभी का स्वागत है!

‘संस्कृता’ एस एन डी टी महिला विश्वविद्यालय की मासिक पत्रिका है जिसका प्रकाशन माननीय कुलगुरु प्रो० उज्वला चक्रदेव की प्रेरणा से आरम्भ हो रहा है। इस पत्रिका का नाम विश्वविद्यालय के सूत्र वाक्य ‘संस्कृता स्त्री पराशक्ति’ से लिया गया है। इस नाम के कारण विश्वविद्यालय की प्रत्येक ‘संस्कृता’ स्वयं को इस पत्रिका से जोड़ कर देखेगी क्योंकि इसमें उनसे सम्बंधित शैक्षणिक व गैर-शैक्षणिक सभी गतिविधियों, जिनके लिए यह विश्वविद्यालय जाना जाता है, का प्रकाशन होगा। इस पत्रिका के माध्यम से इस आँगन में अब हम हर माह मिलेंगे।

आज भारतीय स्त्री जिस रास्ते पर अग्रसर है उसे सारा संसार उत्सुकता से देख रहा है। इस राह पर आगे चलने के लिए उसे जिस शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रेरणा, साहस व सहयोग की आवश्यकता है उसका निर्माण एस एन डी टी महिला विश्वविद्यालय में विश्वस्तर पर किया जा रहा है। इस निर्माण का मासिक लेखा-जोखा ‘संस्कृता’ में प्रकाशित करने का प्रयास रहेगा।

यदि हम एस एन डी टी महिला विश्वविद्यालय के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो समझ सकते हैं कि इसके अस्तित्व का संघर्ष भारतरत्न महर्षि कर्वे के लिए आसान नहीं रहा होगा। १९६६ में पूना में पांच छात्राओं के प्रवेश से शुरू हुए इस विश्वविद्यालय के लिए महर्षि कर्वे ने किसी सरकारी अनुमति या अनुदान कि प्रतीक्षा नहीं की थी। उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति तथा सर विठ्ठलदास ठाकरसी के सहयोग से पूना में जिस महिला विश्वविद्यालय कि स्थापना हुई थी उसका क्षेत्राधिकार आज संपूर्ण भारत है।

स्त्रियों को सशक्त, सक्षम व आत्मनिर्भर बनाने वाले तथा उनके माध्यम से जुड़े हुए परिवार व समाज का भी उत्थान करने वाले इस विश्वविद्यालय में सेवा का अवसर पाना अपने आप में एक वरदान तथा सुखद अनुभव है। यह विश्वविद्यालय सच्चे अर्थों में नारी शिक्षा द्वारा राष्ट्र निर्माण का काम कर रहा है जिसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। यहाँ कार्य करके जिस आनंद कि अनुभूति होती है वह किसी सामान्य स्थान पर जीविका-उपार्जन करने से अलग है। यहाँ स्त्री सशक्तीकरण का जो काम होता है वह व्यवसाय नहीं बल्कि राष्ट्र सेवा है। इस संस्थान से जुड़ कर उस हर चुनौती का सामना करने की शक्ति मिलती है जो आत्म-सम्मान व आत्म-निर्भरता में बाधक हैं। इस विश्वविद्यालय में होने वाले कार्यों की जानकारी अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचे, इसी भावना से ‘संस्कृता’ का प्रकाशन किया जा रहा है। मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका से सुधी पाठकगण निश्चय ही लाभान्वित होंगे। इस प्रकाशन की दीर्घायु और सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ !!

❁ डॉ. रुबी ओझा
(प्र कुलगुरु, एस.एन.डी.टी. विद्यापीठ)





स्वरमयी डॉ. प्रभा अत्रे

प्रत्येक सांगीतिक घटकाची, स्वर-लयीची यथार्थ मांडणी करताना निर्माण होणारी सुंदर, सृजनशील नवनिर्मिती जी शास्त्रीय संगीताच्या रसिकांना मोहून टाकते, असा किराणा घराण्याचा सालंकृत स्वर म्हणजे 'पद्मविभूषण' डॉ. प्रभा अत्रे. नुकतेच भारतसरकारने त्यांना 'पद्मविभूषण' या सन्मानाने गौरवले, त्यांच्या कारकीर्दीतील प्रवासाचा छोटासा आढावा घेण्याचा हा प्रयत्न!

१३ सप्टेंबर १९३२ साली पुण्यात जन्मलेल्या प्रभाताईंचे आई-वडील दोघेही शिक्षक होते. शिक्षणाच्या वातावरणामुळे प्रभाताईंना अभ्यासाची आवड लहानपणापासूनच होती. विजय करंदीकर हे त्यांचे संगीतातील पहिले गुरू. त्यांच्यामुळे सूर-ताल, रागांची ओळख प्रभाताईंना झाली. त्यानंतर त्यांचे शास्त्रीय संगीताचे रीतसर शिक्षण किराणा घराण्याचे ज्येष्ठ गायक पंडित सुरेशबाबू माने यांच्याकडे सुरु झाले.

सुरेशबाबूंनी त्यांच्याकडे असलेली सर्व संगीतविद्या प्रभाताईंना दिली. सुरेशबाबूंच्या आकस्मिक निधनानंतर प्रभाताईंनी सुरेशबाबूंची बहीण 'गानहीरा' हिराबाई बडोदेकर यांचे शिष्यत्व पत्करले. हिराबाईंनी अतिशय प्रेमाने त्यांना शिकवले. बहीण-भावाच्या प्रेमाने आणि संगीतज्ञानामुळे प्रभाताई समृद्ध झाल्या.

पुढे प्रभाताईंनी फर्ग्युसन महाविद्यालयातून विज्ञानाची व नंतर विधी महाविद्यालयातून कायद्याची पदवी घेतली. त्यानंतर ऑल इंडिया रेडियोच्या सहाय्यक निर्माता पदावर त्या नियुक्त झाल्या. १९७१ पासून प्रभाताईंची पहिली डझ (डेप्युटि झर्रर) प्रकाशित झाली आणि प्रभाताई संगीतप्रेमींच्या घरात आणि मनात जाऊन पोहोचल्या. प्रभाताई केवळ उत्तम गायिकाच नाहीत, तर प्रथितयश लेखिका, उत्तम कवयित्रीदेखील आहेत. त्यांच्या नावे जवळ जवळ १५ पुस्तके आहेत. त्याशिवाय एकाच

वेळी ११ पुस्तके प्रकाशित करण्याचा जागतिक विक्रमही त्यांच्या नावे आहे. त्यांच्या 'स्वरमयी' पुस्तकाला महाराष्ट्र शासनाचे पारितोषिकही मिळाले आहे.

प्रभाताई १९७९ पासून आपल्या एसएनडीटी महिला विद्यापीठात संगीत विभागात प्रमुख म्हणूनही कार्यरत होत्या. त्यांनी अनेक विद्यार्थिनी घडवले. 'पद्मश्री', 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार, 'पद्मभूषण' आणि नुकताच २०२२ मध्ये 'पद्मविभूषण' अशा मानाच्या पुरस्कारांनी त्यांना गौरवान्वित केले आहे.

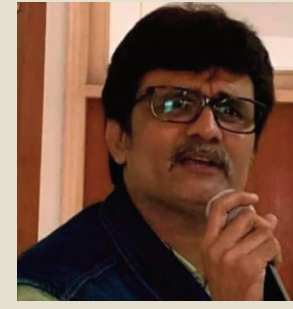
प्रभाताईंनी नवनवीन रागांची निर्मितीही केली आहे. त्यामध्ये अपूर्व-कल्याण, मधुरकंस पटदीप-मल्हार, तिलंग-भैरव इ. रागांचा समावेश आहे. किराणा घराण्याच्या गायकीमध्ये सरगमचा अनोखा प्रयोग, कर्नाटक संगीत शैलीचाही विचार त्यांच्या गायकीत दिसतो. ख्याल, तराना, तुमरी, दादरा, गीत, गझल इ. संगीतप्रकारांमध्ये ५५० हून अधिक रचना त्यांनी केल्या आहेत. 'स्वरांगिनी' हे त्यांचे पहिले बंदिशीचे पुस्तक आहे.

कलाकाराच्या साधनेतील यश आणि त्याचे श्रोते हा कलाकाराचा खरा पुरस्कार आहे, असे मानणाऱ्या प्रभाताईंच्या उत्तुंग कार्याला आमचे विनम्र अभिवादन!

✿ सोनाली बोरकर
(एम.ए.भाग १ मराठी विभाग)



जागतिक महिला दिन निमित्ताने शिक्षण विभाग श्रेणीमध्ये विशेष योगदानासाठी प्रतिष्ठित संस्था वाग्धारा यांच्या तर्फे प्राध्यापक डॉ. रुबी ओझा यांना राजभवनमध्ये मा. राज्यपाल श्री. भगतसिंह कोश्यारी यांच्या शुभहस्ते 'वाग्धारा नवरत्न सम्मान' प्रदान करण्यात आला.



Dr. Kavita Pandya - Assistant Professor in Department of Gujarati won award for Best Research (Ph. D.) on first number from Gujarat Sahitya Akademi, Gandhinagar, Gujarat.

संस्कृत विभागेन निबंध-स्पर्धा

विद्यापीठस्य संस्कृत विभागेन भारतरत्न महर्षि कर्वे महाभागांना ऊनषष्ठीतमां पुण्यतिथीं तथा स्वतंत्रतायाः ७५ वर्षम् अभिलक्ष्य एका निबंधस्पर्धा आयोजिता। निबंधलेखनाय अधोदत्ताः विषयाः आसन्। युनां दृष्ट्या स्वतंत्रतायाः ७५ वर्षाणि। स्वातंत्र्यपश्चात् संस्कृतस्य स्थानम्। संस्कृतं तथा राष्ट्रीय एकात्मता। मराठी, हिंदी, संस्कृतम् आश्रित्य ३२ छात्रैः निबंधाः प्रेषिताः। सहभागी छात्रान् संगोष्ठ्यां प्रमाणपत्राणि दीयन्ते। पारितोषिकार्हाः छात्रा सम्मानिताः भविष्यन्ति।

Workshop on SNDDT WU Electronic Resources

With the covid pandemic receding in Maharashtra, the SNDDT Women's University BharatRatna Maharshi Karve Knowledge Resource Centre organised one day workshop for the

University spends on electronic resources, the Pro Vice Chancellor Prof. Ruby Ojha stressed to achieve return on investment by increasing the usage of databases. 42 librarians from Maharashtra



librarians of its affiliated, conducted and autonomous colleges on Electronic Resources on March 11, 2022. The Director of the Knowledge Resource Centre Dr. Subhash Chavan emphasized on use of electronic resources considering the changing role of librarians. Taking into account the amount that

witnessed detailed presentations from the vendors like APA Psych Articles, Emerald Publishing, EPWRF, Proquest, Sage and Knimbus. Major take away from the workshop was understanding the information available in the electronic resources and how to access it.

महाराष्ट्र शासन व एस. एन. डी. टी महिला विद्यापीठ आयोजित मराठी भाषा संवर्धन पंधरवड्यानिमित्त परिसंवाद संपन्न

भाषा संचालनालय, महाराष्ट्र शासन आणि पदव्युत्तर विभाग, एस. एन. डी. टी. महिला विद्यापीठ, मुंबई यांच्या संयुक्त विद्यमाने 'मराठी भाषा संवर्धन पंधरवडा' मोठ्या थाटात साजरा झाला.

याअंतर्गत 'शालेय विद्यार्थी आणि वाचन संस्कृती' या विषयावरील परिसंवादाचे आयोजन नुकतेच करण्यात आले.

कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी भाषा विभागाच्या संचालक डॉ. विजया डोनीकर होत्या. प्रमुख वक्ते प्रसिद्ध अभ्यासक रमेश पानसे आणि नामदेव माळी होते.

याप्रसंगी बोलताना डॉ. रमेश पानसे यांनी बाल वयातच मुलांना वाचनाची गोडी लावली पाहिजे असे सांगितले. भाषा ग्रहण करण्याबाबत मुलांचे वय आणि मानसिकतेचे त्यांनी यथार्थ विश्लेषण केले. डॉ. नामदेव माळी यांनीही वाचनाचे महत्त्व विविध उदाहरणे देऊन पटवून दिले. विविध उपक्रमांच्या माध्यमातून वाचन संस्कृती वृद्धिंगत करता येते, असे ते म्हणाले. श्रीमती विजया डोनीकर यांनी अध्यक्षीय समारोप केला. संपूर्ण कार्यक्रमाची सुरेख आखणी विभागप्रमुख डॉ. अरुणा दुभाषी यांनी केली. कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक भाषा संचालनालयाचे संजय पवार यांनी केले. प्रास्ताविकात त्यांनी भाषा विभागाच्या कार्यची माहिती दिली. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन डॉ. राजश्री कुलकर्णी यांनी तर आभार प्रदर्शन डॉ. सुनील रामटेके यांनी केले.

कार्यक्रमाची सुरुवात विद्यापीठ गीताने करण्यात आली. प्रस्तुत कार्यक्रमासाठी श्री. जितेश, मराठी विभागाची विद्यार्थिनी दिपाली गावडे यांचे सहाय्य लाभले. कार्यक्रमाला अनेक मान्यवरांची उपस्थिती होती. राष्ट्रगीताने कार्यक्रमाची सांगता झाली.



आजादीना अमृत महोत्सव निमित्त परिसंवाद

१६ इधुआरी, २०२२ने बुधवारे गुजराती, हिन्दी अने मराठी अनुस्नातक विभाग द्वारा अेक-दिवसीय परिसंवादनुं आयोजन करवांमां आवेल. जेमां 'आजादीना ७५ वर्ष अने गुजराती सिनेमा' विषय पर भारतीय सिनेमा अने संगीतना सुप्रसिद्ध समीक्षक श्री हार्दिक लड्डे



मननीय वक्तव्य आपेल. आजादीना ७५ वर्षमां भारतीय सिनेमाना उतारासमां गुजराती सिनेमानां थोगदाननी विस्तारथी यर्था करी. साथोसाथ गुजराती सिनेमानी ऐतिहासिक विगतो पणू पूरी पाडी... विद्यार्थिनी बहिनो माटे आ परिसंवाद माहितीलक्षी अने ज्ञानप्रद रळो...



एस.एन.डी.टी. महिला विद्यापीठाचा ७१ वा दीक्षांत सभारंभ

एस.एन.डी.टी. महिला विद्यापीठाचा ७१ वा दीक्षांत समारंभ शुक्रवार दिनांक २५ फेब्रुवारी, २०२२ रोजी सकाळी ११.०० वाजता सर सीताराम आणि लेडी शांताबाई पाटकर दीक्षांत सभागृह, चर्चगेट येथे साजरा झाला. महान समाजसुधारक भारतरत्न महर्षी धोंडो केशव कर्वे यांनी १९१६ मध्ये स्थापन केलेल्या एस.एन.डी.टी. महिला विद्यापीठाचे शिक्षणाद्वारे महिलांचे सक्षमीकरण हे ध्येय आणि ज्ञानी स्त्री ही एक असीम शक्तिस्त्रोत आहे हे बोधवाक्य या समारंभामुळे पुन्हा एकदा अधोरेखित झाले.



विद्यापीठाच्या कुलगुरु प्रा. उज्वला चक्रदेव यांनी उपस्थितांचे स्वागत केले आणि दीक्षांत समारंभ अहवाल सादर केला. कोरोना काळात विद्यापीठाच्या अध्यापकांनी आणि शिक्षकेतर कर्मचार्यांनी केलेल्या कामाचे कौतुक करून विद्यापीठातील अनेक उपक्रमांची माहिती दिली.

या दीक्षांत समारंभात डॉ. संजय शेडमाके (संचालक, परीक्षा आणि मूल्यमापन मंडळ) यांनी पारितोषिके घोषित केली. यावेळी एकूण १४,५८९ विद्यार्थिनींना पदवी/पदविका प्रदान करण्यात आल्या. यात स्नातक पदवीचे (बॅचलर डिग्री) प्रमाण सर्वाधिक (११,९१२) होते. स्नातकोत्तर पदवी (२,२७४), स्नातकोत्तर पदविका (१४०), पदवीधर पदविका (२१०), प्रमाणपत्र (१२) आणि ४१ पीएच.डी. प्रदान करण्यात आल्या. या दीक्षांत समारंभात

स्वायत्त महाविद्यालयातील ४५६ विद्यार्थिनींना पदवी/ पदविका प्रदान करण्यात आल्या. एकूण ७४ सुवर्णपदके, २ रौप्यपदके व १३९ बक्षिसे देण्यात आली.

कार्यक्रमाचे प्रमुख पाहुणे माननीय मंत्री श्री.उदय सामंत, उच्च व तंत्रशिक्षण विभाग (महाराष्ट्र राज्य) यांनी त्यांच्या आंतरजालावरून केलेल्या भाषणामध्ये शासनाकडून असलेल्या अनेक अपेक्षांची पूर्ती होईल असे आश्वासन दिले. विद्यापीठाचे अनेक प्रस्ताव मान्य करून शासन त्यासाठी निधी उपलब्ध करून देईल असे सांगितले. विद्यापीठाचे प्रश्न सोडवण्यासाठी पूर्ण सहकार्य करण्याची तयारी त्यांनी दर्शविली. विद्यापीठाच्या विद्यार्थिनींनी देशाचे नेतृत्व करावे अशी अपेक्षा व्यक्त करून त्यांनी समाजकार्यात पुढे यावे, असे आवाहन केले.

महाराष्ट्र राज्याचे राज्यपाल, विद्यापीठाचे कुलपती व या कार्यक्रमाचे अध्यक्ष श्री भगतसिंह कोश्यारी यांनी त्यांच्या अध्यक्षीय भाषणात पदवीधारक विद्यार्थिनींचे अभिनंदन केले आणि या पारितोषिक प्राप्त सुवर्णकन्याकांनी आपल्या कार्याने आदर्श भारतीय नागरिक बनावे, आपल्या नियोजित क्षेत्रात पारंगत बनावे आणि देशाला आत्मनिर्भर करण्यात संपूर्ण योगदान देण्याचा संकल्प करावा अशी अपेक्षा व्यक्त केली. दिनदयाल उपाध्याय यांच्यासारख्या अनेक भारतीय नेत्यांच्या आणि क्रांतिवीरांच्या जीवनातून प्रेरणा घेऊन, आयुष्यात उत्तम आदर्श ठेऊन पुढील कार्य करण्यासाठी विद्यार्थिनींना शुभेच्छा दिल्या.

कार्यक्रमाच्या शेवटी कुलसचिव, डॉ. सुभाष वाघमारे यांनी सर्व मान्यवरांचे आणि उपस्थितांचे आभार मानले.



International Women's Day Celebration



International Women's Day is celebrated every year on March 8 to promote gender equality and to encourage people to come together to make the world a more equitable place. On this day 8th march 2022, of blood donation and tree plantation was organized by the SNTD University, Churchgate



campus. Where Maharashtra State's Educational Minister Uday Samant was the chief guest and special guest Sonali Patankar were present on this occasion along with VC Dr. Ujwala Chakradeo, PVC Dr. Ruby Ojha and Register Dr Subhash Waghmare were present. All branches Dean, HOD, Professor, staff from all the Institutes and students were also present.



महिला दिनानिमित्त एस एन डी टी महिला विद्यापीठास उदय सामंत यांचे गिफ्ट

श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठाच्या विकास कामांसाठी ५ कोटी रुपये देणार असल्याची घोषणा राज्याचे उच्च व तंत्र शिक्षण मंत्री उदय यांनी केली. महिला दिनानिमित्त एक प्रकारे त्यांनी एस एन डी टी विद्यापीठास गिफ्ट दिले आहे. यामुळे विद्यापीठामध्ये आनंदाचे वातावरण तयार झाले आहे.

जागतिक महिला दिनानिमित्त एस एन डी टी महिला विद्यापीठामध्ये वृक्षारोपण, रक्तदान शिबीर आदी कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. त्यावेळी मंत्री महोदयांनी घोषणा केली. यावेळी विद्यापीठाच्या कुलगुरू डॉ उज्वला चक्रदेव, उप कुलगुरू डॉ रुबी ओझा, कुलसचिव डॉ सुभाष वाघमारे, तंत्रशिक्षण विभागाचे प्रधान सचिव डॉ. विकास चंद्र रस्तोगी, उच्च शिक्षण संचालक डॉ धनराज माने, आहान फोउनडेशनच्या प्रमुख सोनाली पाटणकर आदी मान्यवर उपस्थित होते.

उच्च व तंत्र शिक्षण मंत्री श्रीउदय सामंत पुढे म्हणाले की, एस एन डी टी विद्यापीठाने रत्नागिरीमध्ये महिलांसाठी महाविद्यालय स्थापन करण्याची अपेक्षा कुलगुरू यांच्याकडे केली. आजची नारी हि अबला नाही तर सबला आहे. राजमाता जिजाबाई, पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होळकर, क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले यांच्या कार्यावर आधारित चरित्रे आजच्या विद्यार्थी आणि विद्यार्थिनींनी वाचली पाहिजेत, असे उच्च व तंत्र शिक्षण मंत्री उदय सामंत यांनी सांगितले. विद्यापीठ परिसर हा लैंगिक अत्याचार मुक्त असला पाहिजे, लैंगिक अत्याचार विरोधात तक्रारी आल्यास स्वतः जातीनं लक्ष घालणार असल्याचे मंत्री उदय सामंत यांनी सांगितले.

एस एन डी टी हे आशिया खंडातील पहिले महिला महाविद्यालय आहे. देशातील सात राज्यात विद्यापीठाची व्याप्ती आहे. बाहेरील राज्यात गेल्यास विद्यापीठाची मदत होत असल्याचे त्यांनी आवर्जून सांगितले.



Dr. Jaswandi Wamburkar's talk in the University of Oxford

Dr. Jaswandi Wamburkar (Head and Associate professor Department of History) was invited to make a presentation in the International conference on Maharashtra organised by the University of Oxford between 21-25 September 2021 (online) on 'Circulation in Maharashtra from antiquity to the present day'.



The conference tried to explore various themes concerning History of Maharashtra stretching across ancient to modern period covering wide range of themes such as Medieval Bhakti literature, modern Dalit and Muslim Marathi literature, Marathi travelogues and some key figures such as Prabodhankar Thakare, history writing on Chhatrapati Shivaji Maharaj, Annabhau Sathé's writings to mention a few.

1934-December 1935) in the diffusion of feminist consciousness in the Marathi-speaking society across the nation. The magazine 'Gruhlakshmi' was launched by Tara Tilak and Piroj Anandakar in 1927, Mai Varkerkar launched the monthly magazine 'Mahila' (meaning woman) in July 1933. Influenced by the nationalist, feminist and progressive ideas of his times, Shankarrao Kirloskar launched Stree in 1930.

Dr. Jaswandi in her paper 'Marathi Women's Magazines: Transmitter of Feminism' made an attempt to investigate an unexplored area of women's magazines which has occupied a less central space in media and media research. She presented the contribution of the four Marathi women's magazines namely 'Gruhlakshmi' (June 1927-May 1931) 'Stree' (1930-1986), 'Mahila' (July 1933-November 1936) and 'Navi Gruhlakshmi' (January

She summarized that the editors of Stree handled the financial aspect of the magazine with equal care and competence making it commercially a successful enterprise. She further pointed out that the editors along with its trained staff implemented different innovative ideas, provided its readers a platform for discussions and debates and accommodated the diverse viewpoints on many contemporary issues concerning women of those times.

Workshop on Behavioral Safety in the Education Sector

The Department of Psychology, SNDD Women's University, Churchgate had organized a National Level Workshop on Behavioral Safety in the Education Sector.

The Workshop began with the warm welcome address given by Dr. Nilesh Thakre, Head of Psychology Department, SNDD Women's University. The Programme was introduced by Prof. Shankar Murthy, Dean, NITIE. Dr. Harbans Lal Kaila, Director of the Forum of Behavioral Safety conveyed the Context setting. The Vice Chancellor of SNDD Women's University, Prof. Ujjwala Chakradeo delivered the Inaugural speech. Prof. Manoj Tiwari, Director, NITIE, Mumbai gave the special address. Dr. Gautam Gawali addressed the audience about the at-risk behaviors that students engage in. Reflections of the workshop were provided by Mr. Shankar Rajagopalan and Mr. Sivaramkrishna Rao. The students, faculty members and the Directors of various institutions present were requested to provide their reflections about the Workshop as a whole. Concluding remarks were issued by Mr. K K Sharma and the final vote of Thanks was delivered by Dr. Suresh K. Singh.

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित परिसंवाद

एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई के हिंदी विभाग द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव और हिंदी विभाग के स्वर्ण महोत्सव के पावन उपलक्ष्य पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। यह आयोजन हिंदी विभाग, मराठी विभाग तथा गुजराती विभाग के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के कुलगीत से किया। तदुपरांत माँ सरस्वती की प्रतिमा स्थापित कर अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। मराठी विभाग की छात्रा सूश्री सोनाली बोरकर ने सरस्वती वंदना को स्वर और लय के साथ गाकर वातावरण को संगीतमय बना दिया। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुनीता साखरे ने कार्यक्रम की प्रस्ताविकी बताकर कार्यक्रम



के उद्देश्य तथा हिंदी विभाग के पचास वर्ष पूर्ण होने पर विभाग के योगदान पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर हिंदी विभाग की अतिथि वक्ता डॉ. राजन नटराजन पिल्लै थी। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुनीता साखरे ने अतिथि वक्ता को शॉल ओढ़ाकर तथा तुलसी पौधा स्मृति चिह्न के रूप में भेंट देकर उनका स्वागत किया।

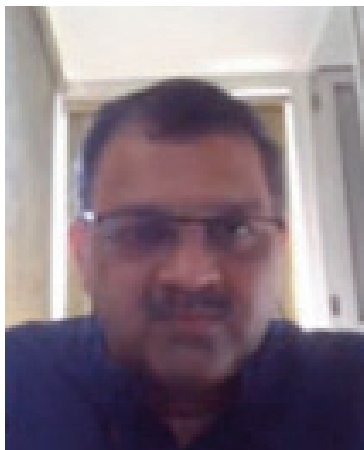
डॉ. राजन जी ने अपने व्यक्तित्व के माध्यम से आज़ादी के ७५ वर्ष में हिंदी भाषा और साहित्य के योगदान पर सविस्तार चर्चा की। उन्होंने कहा कि राष्ट्र की अखंडता में हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज़ादी का स्वतंत्रता आंदोलन हिंदी भाषा के माध्यम से ही आगे बढ़ा। सूत्र संचालन और आभार अतिथि प्राध्यापक डॉ. संदेशा भावसार ने किया। डॉ. राजन जी का परिचय अतिथि प्राध्यापक कुसुम त्रिपाठी ने दिया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह था कि सभी विद्यार्थी आज़ादी के ७५ वर्ष में हिंदी भाषा और साहित्य के योगदान से अवगत हो सकें। आज़ादी और हिंदी भाषा तथा साहित्य के महत्व को जान सकें।

UNDERSTANDING UNION BUDGET 2022-23

BOOK RELEASE OF DR. ROHINI KASABE

The department of Economics at SNDD Women's University, Mumbai, conducted a special lecture on "understanding the Union Budget 2022-23" on 26th February 2022. Shri. Mangesh Soman, the Joint President and Head, Corporate Economics Cell at Aditya Birla Group was the key resource person for the lecture. during this lecture Dr. Rohini Kasabe has released her book, "Socio-Economic condition of Tribal Beneficiaries under MGNREGA in Murbad Taluka of Thane District" in the program.



The lecture began with pre-budget scenario and the existing fiscal pressures, the effect of pandemic and global economic instability leading to deficit financing strategy adopted by the Union government for this fiscal. In-depth analysis of - a higher fiscal deficit of 6.4% for FY 2022-23; involuntary revenue expenditure side which had impacted the deficit was done. After a thorough overview of the fiscal arithmetic of the government, the policy intent of the budget was decoded.

Interpretation of the government's focus on improving recovery and boosting growth in the medium term; the impact of increased capital expenditure on several sectors, asset monetization pipeline and divestment were discussed.

Overall the budget was commendable, realistic in goals and approach which is a necessity in current times. In the Q&A session after, many students including Hon. Prof. Ruby Ojha ma'am, asked questions to the speaker to which he addressed gladly. The entire program was conducted successfully.

Lighting and Graduation Ceremony Of Nursing College



Lelabai Thackersey college of nursing is conducted college of SNDD WOMEN'S UNIVERSITY, Mumbai since 1952. It is the first college to provide B.Sc, M.Sc and P.hD nursing program.

Recently, candle lighting and graduation ceremony was held in Patkar Hall at SNDD Women's University, Mumbai. Dr. Mohan Joshi, Dean of L.T. M.G hospital, Sion was the Chief guest for the function. Dr. Sonali Rode, Joint Director, Higher and Technical Education, Mumbai was the guest of honour. The Vice Chancellor of SNDD Women's University, Professor Dr. Ujjwala Chakradev presided over the function and addressed the graduates and postgraduates.

Madam welcomed 1st yr B.Sc nursing students and

congratulated the graduates wished them a successful career ahead. Madam also praised the graduates for their dedicated work during Covid pandemic. Total 195 undergraduate students, 28 post graduate students with 48 graduates were present for the function.

The students were honoured with various awards like Gold medal, for standing 1st in B.Sc.Nursing and M.Sc.Nursing respectively and students were also awarded a trophy in various Nursing subjects. Student were also awarded for obtaining first class in Nursing in all Four years. General proficiency 1st place and 2nd place were awarded to students for their over all performance of four year.

Shreeamati Nathibai Damodar Thackersey Women's University is the first women's university in India and in South East Asia. It has a glorious tradition of 106 years. The university has its headquarter at Churchgate campus, Mumbai and the other two at Karve road in Pune and at Juhu in Mumbai. This article is not a detailed account but a cursory glance at the landmarks of the achievements of the university.

In the month of December of 1915, Bhartaratna Maharshi Dhondo Keshav Karve came across a booklet of a women's university in Japan and the idea of founding a women's university struck to his mind. In the presidential speech delivered in the Social Science Conference of Indian National Congress, Maharshi Karve made an announcement of the women's university and within a span of just six months, the university was established on 3rd June 1916 with the name Bharatvarsheeya Mahila Vidyapeeth (The Indian Women's University) in Pune.

The university was inaugurated by Dr. Ramkrishna Bhandarkar -- a strong champion of women's education and Prathanasamajist as the first chancellor of the university. Wrangler Raghunath P. Paranjape was the first Vice Chancellor of the university. The first five students who graduated from the university were Varubai Shevade, Kamalabai Deshpande, Gangubai Patwardhan, Revatibai Karve and Godavari Ketkar. Sir Vithaldas Thackersey donated generous grant to the university on certain conditions and thereafter the university received its name Shreeamati Nathibai Damodar Thackersey Women's University.

Maharshi Karve did pioneering work in the field of female education with the establishment of Anathbalikashram (1899) and Mahila Vidyalaya (1907). The foundation of the women's university was the triumph of Karve's diligent efforts and dauntless optimism; It was also the manifestation of the changing psyche of the Indian society towards women.

Some of the life members and students of the Ashram contributed immensely for the growth of the university. Parvatibai Athavale, Gangubai Tambale, Kamalabai Deshpande, Seetabai Annigeri, Banutai Aho, Balutai Khare alias Malatibai Bedekar, Sharadabai Sathe and

many others played a significant role in the initial years of the university. The university was fortunate to receive many devoted male-associates of Karve such as Narayan Athavale, Gopal Chiplunkar, Vasudeo Maydeo, Vaman Abaji Modak, Vaman Malhr Joshi to mention a few. The government of India conferred Bharatratna - the highest civilian award on Maharshi Karve in 1958.

In 1939, the first convocation of the university was held in the gracious presence of Mahatma Gandhi, Saradar Patel, Sarojini Naidu, Subhash Chandra Bose and Hansa Mehta. In 1941, the university celebrated its silver jubilee when Dr. Sarvapalli

were included in the curriculum such as Home Science, Physiology, Hygiene and Psychology, History and Sociology .

The women came out of houses on large scale in the thirties and forties to participate in the Indian national movement. During the Second World War (1939-1945) women began to work in various domains as nurses, doctors, professors, artists and journalists. In the post-independence period, it was envisaged that women should be equal partner with men in the nation-building process. The university made an attempt to meet the growing aspirations of the new generation women.

During 1947 to 1975, new courses on

fashion designing, jewellery designing, management, computer science, law were started in the university.

The motto of the university is - an enlightened woman is a source of infinite strength. The ethos of the university has been truly reflected in the university song Sanskruta Stree Parashakti.

A university is genuinely recognized by its students, professors, administrators and leaders. The university has given thousands of capable women to the nation who have left their marks in various fields.

Faculty, principals and scholars such as Vaman Malhar Joshi, G. B. Sardar, Sharayu Bal, S. G. Malashe, Shakuntala Shah, Neera Desai, Sudha Desai, Mani Kamerkar, Galdys Sigamany, Suresh Dalal, H. V. Inamdar, Vijaya Rajadhyaksha, Maithreyi Krishnaraj, Meera Kosambi, Mariamma Varghese, Neeta Ramayya, noted singer Prabha Atre - the recipient of the all three Padma awards and celebrated singer Veena Sahastrabuddhye and many others were the torch bearers of the university.

Educationist Anutai Wagh, social workers - Gangutai Patwardhan, Mrunalini Desai, Subhadra Shroff, and Sumati Vaidya, renowned Marathi writers and scholars such as Balutai Khare, Krishnabai Mote, Sanjeevani Marathe and Padma Gole; theatre artists such as Vandana Gupte and Bharati Acharekar, singers Pramila Datar and Shruti Sadolikar, activists Pramila Dandvate and Flavia Agnes are the distinguished alumnae of the university. The list is unending! It is not possible to record the names of all of them here. The Newsletter will make an attempt to publish the achievements of the alumnae in its forthcoming issues.

In 2016, the university completed its glorious hundred years. S.N.D.T. Women's University is the first choice of thousands of female students. The university has expanded its branches in seven states. It is striving hard to cater to the demands and challenges of the new millennium. It has truly become a platform to reach new horizons for the new generation of Indian women.

Dr. Jaswandi Wamburkar
(HOD-History)

REMINISCENCES OF THE PAST



Radhakrishnan presided over the function.

The first headquarter of the university was Pune. Later in 1936, it was shifted to Mumbai. Under the able leadership of Sir Sitaram Patkar, the Vice-Chancellor (1930-31) and Chancellor of the university (1932-46), the university received statutory recognition in 1951. Shreeamati Premlilaben Thackersey played a significant role in her tenure of the Vice Chancellorship by collecting large sums and continuously donating funds for the development and expansion of the university.

A university truly reflects the ethos of its time. The main objective of the women's university was to impart higher education to women in mother tongue. The realities pertaining to women gradually changed and subsequently the courses and curriculum also changed in the course of time in the twentieth century. Initially, the university used to offer degrees such as Gruhitgama (Graduate in arts) and Pradeygama (Master of arts). The subjects suitable to the role of women as homemaker



Nursing, Home Science, Food and Nutrition, Education, Textile, Fine arts, Painting and Music were introduced which were very popular among the students.

In 1964, the university was granted a plot of 21 acres at Juhu (Mumbai) wherein the third campus of the university was built. Indira Gandhi, the then prime Minister of India inaugurated the Golden Jubilee of the university in the year 1966 whereas Dr. Zakir Hussain, President of India presided over the concluding function of the Jubilee in 1967.

1975 was declared as the Women's year. The women's movements and the feminist movements of the seventies brought a new consciousness among Indian women. The first women's studies centre in India was established in the university in 1974. The new wave came up with the thought that women are capable of working in all the fields and streams. In the subsequent years, many new professional degree and diploma courses in various disciplines such as science, commerce, engineering, pharmacy, technical education,

विश्व महिला दिवस उत्सवनी लव्य उजवणी

८ मार्च २०२२ ने मंगळवार विश्व महिला दिवसना पवित्र अवसरे मीडीआई कोलेज, विलेपार्ले (गुजराती विभाग) तथा मुंबईची भूभ्रज प्रतिष्ठित 'लेभनी' संस्थाना संयुक्त उपक्रमे ऐक लव्य कार्यक्रमनु आयोजन अमारा विभाग द्वारा करवामां आवेलुं हुतुं. या दरमिथान अमारा विभागनी विद्यार्थिनी अडेनो द्वारा सुंदर नाट्यप्रस्तुति, काव्यप्रस्तुति तथा वार्ताप्रस्तुति करवामां आवेला. साथे अमारा विभागनी विद्यार्थिनी अडेनो द्वारा तैयार करवामां आवेल सामाधिक सिस्सुक्षा सामाधिक अंकनु विमोयन कोलेजना आयार्थ कृतिका देसाईना हुस्ते कभवामां आवेल.

आयोजन अमारा विभाग द्वारा सुंदर नाट्यप्रस्तुति, काव्यप्रस्तुति द्वारा तैयार करवामां आवेलुं हुतुं. या दरमिथान अमारा विभागनी विद्यार्थिनी अडेनो द्वारा सुंदर नाट्यप्रस्तुति, काव्यप्रस्तुति तथा वार्ताप्रस्तुति करवामां आवेला. साथे अमारा विभागनी विद्यार्थिनी अडेनो द्वारा तैयार करवामां आवेल सामाधिक सिस्सुक्षा सामाधिक अंकनु विमोयन कोलेजना आयार्थ कृतिका देसाईना हुस्ते कभवामां आवेल.

विश्व मातृभाषा दिवस उत्सव

२१ डेब्रुआरी, २०२२ने सोमवारे विभागनी विद्यार्थिनी अडेनो द्वारा "विश्व मातृभाषा दिवस"ना उत्सवनु सुंदर आयोजन करवामां आवेल... आ निमित्ते अतिथिविशेष तरीके मीडीआई कोलेज, मुंबईना तत्वज्ञान विभागना अध्यक्ष डो. दीपेश उपाध्याय, गुजराती विभागना अध्यक्ष डो. दशरथ पटेल तथा असे.अन.डी.टी. मडिला विद्यापीठ, मुंबईना संस्कृत विभागना अध्यक्ष डो. जितेंद्र तिवारी उपस्थित रव्या ... विभागनी अडेनो द्वारा तैयार करवामां आवेल 'प्रयास' अंक-११नु विमोयन करवामां आवेल... आ निमित्ते रामाध्याय अने मडामारत ग्रंथना श्री पात्रो द्वारा प्रगटतुं जवनदर्शन विषय पर डो. दीपेश उपाध्याय तथा मातृभाषानु मडत्व विषय पर डो. दशरथ पटेल अ भूभ्रज रसप्रद वक्तव्य आपेल... अडेनो द्वारा सुंदर कलाप्रस्तुत पाण करवामां आवेल...



एस. एन. डी. टी शिक्षणशास्त्र महाविद्यालयास

स्वच्छ भारत जिल्हा स्तरीय पुरस्कार जाहिर

आझादी का अमृतमोहत्सव अंतर्गत नेहरू युवा केंद्र पुणे आणि क्रीडा मंत्रालय भारत सरकार, पुणे महानगरपालिका, जिल्हा प्रशासन पुणे, यांच्या संयुक्त विद्यमाने आझादी का अमृतमोहत्सव निमित्त आयोजित स्वच्छ भारत अभियान १ ऑक्टोबर २०२१ ते ३१ ऑक्टोबर २०२१या कालावधीत उत्तम प्रकारे सहभाग नोंदविल्याबद्दल एस. एन. डी. टी शिक्षणशास्त्र महाविद्यालयास स्वच्छ भारत अभियान २०२१-२०२२ जिल्हा स्तरीय पुरस्काराने गौरविण्यात आले यासाठी महाविद्यालयाच्या प्राचार्य डॉ.नलिनी पाटील यांच्या मार्गदर्शनाखाली सर्व प्राध्यापकांनी आणि कर्मचाऱ्यांनी काम केले. या उपक्रमासाठी डॉ सारिका बहिरट यांनी पुढाकार घेऊन हा उपक्रम चालू ठेवला आहे.

एस. एन. डी. टी शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय कायम शाश्वत विकासासाठी प्रयत्नशील असते. पर्यावरण पुरक गोष्टीसाठी कायम विद्यार्थ्यांना प्रोत्साहन



दिले जाते कमीत कमी कागद वापरवा यासाठी पाठपोट सर्व अहवाल घेतले जातात. पाठकोरे कागद कच्या कामांसाठी वापरले जातात.तशा सूचना विद्यार्थी प्राध्यापक आणि कर्मचाऱ्यांना असतात. विद्यावाचस्पती पदवी साठी शोध प्रबंध देखील पाठपोट छापावे अशी सूचना असते.महाविद्यालय कमीत कमी प्लास्टिक वापरले जाते कच्याचे व्यवस्थापन स्वतंत्र केल्यामुळे प्रशासनाला तो घेवून जाणे सोईचे

झाले.कच्याची विभागणी प्लॅस्टिक कचरा, घनकचरा, रद्दी कागद अशा प्रकारे स्वतंत्र ठेवल्या जातात.यासाठी प्रशासनाने देखील महाविद्यालयाचे कौतुक केले. विशेष उल्लेखनीय म्हणजे कचरा गोळा करण्याचे काम ज्या कर्मचाऱ्यांनी केले ते साखरे मावशी आणि संग्राम दादा हा पुरस्कार घेण्यासाठी उपस्थित होते. प्रशासनाने या उपक्रमाची देखील दखल घेतली आणि त्यांना देखील सन्मानित करण्यात आले.

महाराष्ट्र राज्य अध्यापक विकास संस्थेसोबत एसएनडीटी महिला विद्यापीठाचा सामंजस्य करार

कोविड १९ सारख्या जागतिक आपत्तीमुळे विद्यार्थ्यांना ऑफलाईन शिक्षणाकडून ऑनलाईनकडे यावे लागले. त्यामुळे विद्यार्थ्यांची जीवनशैली बदलली. या बदललेल्या जीवनशैलीमुळे विद्यार्थी मानसिक तणावाच्या स्थितीकडे जाऊ नयेत यासाठी त्यांना योग्य मार्गदर्शन करणे गरजेचे आहे. विद्यार्थ्यांना योग्य मार्गदर्शन करण्यासाठी महाराष्ट्र राज्य अध्यापक विकास संस्था आणि श्रीमती ना.दा.ठाकरसी महिला विद्यापीठ, मुंबई (एसएनडीटी) यांच्यात दिनांक २८ जानेवारी २०२२ रोजी सामंजस्य करार करण्यात आला. सह्याद्री अतिथीगृह येथे उच्च व तंत्रशिक्षणमंत्री उदय सामंत यांच्या प्रमुख उपस्थितीत हा करार करण्यात आला. यावेळी उच्च व तंत्र शिक्षण विभागाचे प्रधान सचिव विकासचंद्र रस्तोगी, महाराष्ट्र राज्य अध्यापक विकास संस्थेचे कार्यकारी संचालक विनायक निपुण, एसएनडीटी महिला विद्यापीठाच्या कुलगुरु डॉ. उज्वला चक्रदेव, कुलसचिव डॉ. सुभाष वाघमारे, डॉ. जयश्री शिंदे व विविध मान्यवर उपस्थित होते.

मागील दोन वर्षात विद्यार्थ्यांच्या ऑनलाईन शिक्षणामुळे प्राध्यापक आणि विद्यार्थी यांच्यातील संवाद कमी झाला आहे. यामुळे विद्यार्थी सतत तणावाच्या वातावरणात स्वतःला असुरक्षित समजू



लागल्याचे चित्र दिसत आहे. देशाच्या विकासाला गती देण्यात युवा पिढीची मोठी भूमिका आहे. या युवा पिढीचे मानसिक आरोग्य सांभाळणे गरजेचे आहे त्यामुळे या शैक्षणिक संस्थानी यासंदर्भात पुढाकार घ्यावा आणि बदललेली जीवनशैली, विद्यार्थ्यांचे करिअर, मानसिक आरोग्य, माहिती तंत्रज्ञान, भविष्यातील रोजगाराभिमुख मार्गदर्शन करावे असे आवाहन उच्च व तंत्र शिक्षण मंत्री उदय सामंत यांनी यावेळी केले.

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणातील मुख्य घटक असलेल्या उच्च शिक्षणातील सुधारणांवर प्रभाव टाकण्यासाठी प्राध्यापकांशी व

विद्यार्थ्यांशी संलग्न होऊन आणि त्यांना प्रेरित करण्याचे कार्य यातून होणार आहे. या माध्यमातून मानवी जीवनातील कला, संस्कृती, पुरातत्व, माहिती तंत्रज्ञान, स्त्री पुरुष समानता, दिव्यांगांसाठी माहिती तंत्रज्ञानाचा उपयोग, विद्यार्थ्यांना करिअर मार्गदर्शन, ताणतणाव, बदललेल्या जीवनशैलीतील शिक्षण अशा विविध विषयांवर प्रशिक्षण दिले जाणार आहे. एसएनडीटी महिला विद्यापीठ हे प्रामुख्याने महिलांचे विद्यापीठ असल्यामुळे महिला सक्षमीकरणाच्या अनुषंगाने व अनेक विद्यार्थिनींना त्यांच्या व्यक्तिमत्व विकासाच्या दृष्टीने या प्रशिक्षणाचा उपयोग याद्वारे निश्चित होणार आहे.

बसंत पंचमी के उपलक्ष्य पर हिंदी विभाग द्वारा सरस्वती पूजन

एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई के हिंदी विभाग द्वारा बसंत पंचमी के पावन उपलक्ष्य पर सरस्वती पूजन का आयोजन किया गया। माँ सरस्वती की प्रतिमा स्थापित कर विद्यार्थियों ने पारंपरिक वस्त्रों में विधि-विधान से आराधना की। छात्रा रानी सिंह और राजवती यादव ने हिंदी साहित्य के महाप्राण निराला जी द्वारा रचित 'वर दे वीणा वादिनी' प्रार्थना को स्वर और लय के साथ गाकर वातावरण को संगीतमय बना दिया। मुख्य अतिथि दक्षिण मुंबई की नगर सेविका आदरणीय डॉ. अनुराधा पोद्दार थी। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुनीता साखरे ने तुलसी पौधा स्मृति चिह्न के रूप में भेंट देकर उनका स्वागत किया और कार्यक्रम के उद्देश्य और प्रस्तावना पर प्रकाश डाला।



हिंदी विभाग में ये परम्परा प्रारम्भ से रही है। प्रति वर्ष बसंत पंचमी के दिन माँ सरस्वती जी की पूजा और अर्चना की जाती है। विगत दो वर्षों से कोरोना के कारण प्रत्यक्ष कार्यक्रम नहीं हो पाया। इस वर्ष कोरोना के प्रभाव के कम होने की वजह से प्रत्यक्ष रूप से सभी प्राध्यापक एवं छात्राएँ सम्मिलित हुईं और माँ सरस्वती से प्रार्थना की कि वे चारों ओर नव उल्लास, नव उमंग, नव हर्ष को संचारित करें। इस दिन जन्मे हिंदी साहित्य के छायावादी कवि महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी द्वारा रचित काव्य 'सखि, वसंत आया' के माध्यम से स्मरण किया गया और हिंदी साहित्य में उनके योगदान को रेखांकित किया गया। बसंत पंचमी के अवसर पर देशभर के शिक्षाविद् और विद्यार्थी विद्या, ज्ञान, कला एवं संगीत की देवी माँ सरस्वती की पूजा अर्चना करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि उनके ज्ञान में वृद्धि हो। कार्यक्रम में एम.ए. की छात्राओं के द्वारा काव्य प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के मराठी विभाग की अध्यक्ष डॉ. अरुणा दुभाषी, गुजराती विभाग की अध्यक्ष डॉ. दर्शना ओझा, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. जितेंद्र तिवारी तथा गुजराती विभाग के प्राध्यापक डॉ. कवित पाण्डेय तथा हिंदी और गुजराती विभाग की छात्राएँ मौजूद थीं। संचालन डॉ. संदेशा भावसार द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन किया गया।

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार एताभ्यामुभाभ्याम् एका राष्ट्रीय संगोष्ठी

सर्वे संस्कृतानुरागिणः ध्यानं दातुमर्हन्ति। एस.एन.डी.टी. महिलाविद्यापीठस्य संस्कृतविभागः तथा 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालयः', शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार' एताभ्यामुभाभ्याम् एका राष्ट्रीय संगोष्ठी मार्च मासस्य २२, २३, २४ दिनांके आयोजिता भविता।

महाराष्ट्रस्य महामहिम राज्यपाल महाभागानां करकमलेभ्यः अस्याः संगोष्ठ्याः शुभारंभः भविष्यति। 'राष्ट्रनिर्माण में भारतीय भाषाओं की भूमिका' इत्येतद् विषयमधिकृत्य भारतवर्षस्य उत्तरप्रदेशवंगप्रदेशकर्नाटकमहाराष्ट्र दिल्लीगुजरातादि विभिन्नजनपदेभ्यः

आगताः विद्वांसः संगोष्ठ्यां भाग वक्ष्यन्ति। एतेषां विदुषां वैदुष्यपूर्णानि प्रवचनानि श्रोतुं स्वर्णिमावसरः एष। अन्य विशेषः भारतीयभाषाः अधिकृत्य शोधपराः निबंधाः विद्वद्भ्यः आहूताः। एतेषु चयितानां वाचनमपि संगोष्ठ्यां श्रोतुं शक्यते।

जगन्नाथ दळवी सेवानिवृत्त

एस.एन.डी.टी महिला विद्यापीठातील एक कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी म्हणजे आपले जगन्नाथ दळवी यांच्या ३१ वर्षांच्या कारकीर्दीस पूर्णविराम लागला. शिपाई म्हणून दाखल झाल्यापासून ते कनिष्ठ लेखापाल होई पर्यंतचा दांडगा अनुभव



दळवींच्या गाठीशी होता. त्याचा फायदा विद्यापीठास लाभला. विद्यापीठात काम करत असताना त्यांना सहाय्यक कर्मचाऱ्यांची ही साथ लाभली. इथून निवृत्त झाल्यानंतर त्यांनी आपल्या गावी जाऊन शेती करण्याचा धाडसी निर्णय घेतला आहे. पुढील वाटचालीस एस.एन.डी.टी. महिला विद्यापीठा तर्फे जगन्नाथ दळवी यांना मनापासून शुभेच्छा.

श्री. ना. दा. ठा. महिला विद्यापीठात मराठी भाषा दिन संपन्न

मुंबई येथील श्री. ना. दा. ठा. महिला विद्यापीठातील इतिहास विभाग, अर्थशास्त्र विभाग आणि समाजशास्त्र विभाग यांनी संयुक्त विद्यमाने मराठी भाषा दिन साजरा



झाला. या निमित्त मराठी विश्वकोश मंडळाचे अध्यक्ष डॉ. श्री. म. तथा राजा दीक्षित यांचे 'मराठी भाषेचे वर्तमान' या विषयावर व्याख्यान पार पडले. मध्ययुगीन काळापासून मराठी भाषा कशी उत्क्रांत झाली इथपासून ब्रिटिश काळात निर्माण झालेले नवे मराठी साहित्य आणि तिचे सद्यकालीन वास्तव अशा विशालपटावर डॉ. दीक्षित यांनी विषयाची मांडणी केली. मराठी विश्वकोश सामान्य माणसापर्यंत कसा पोचवता येईल यासाठी आम्ही प्रयत्नशील आहोत, असेही त्यांनी नमूद केले. मराठी भाषेचे भवितव्य उज्वल असून ती प्रवाही राहिल, यासाठी मला काय करता येईल याचा प्रत्येकाने विचार केला पाहिजे, अशा शब्दांत त्यांनी विषयाची सांगता केली.

या कार्यक्रमाला अध्यक्ष म्हणून विद्यापीठाच्या कुलगुरु डॉ. रुबी ओझा उपस्थित होत्या. मराठी भाषेतील साहित्य समृद्ध असून प्रत्येक मराठी माणसाने ती शिकली पाहिजे, असे अध्यक्षीय भाषणात त्या म्हणाल्या.

श्री. ना. दा. ठा. महिला विद्यापीठाची स्थापना भारतरत्न महर्षी कर्वे यांनी १९१६ साली स्त्रियांना मातृभाषेतून उच्च शिक्षण मिळावे, या हेतून केली होती; तेव्हा महिला विद्यापीठाने मराठी भाषेला ज्ञानभाषा करण्यात खारीचा वाटा निश्चित उचलला आहे, हा विचार प्रास्तविकात इतिहास विभागप्रमुख डॉ. जास्वंदी वांबूरकर यांनी व्यक्त केला. अर्थशास्त्र विभागाचे प्रमुख डॉ. संजय फड यांनी वक्ते व अध्यक्ष यांचा परिचय करून दिला आणि समाजशास्त्र-विभागप्रमुख डॉ. सुजाता गोखले यांनी आभारप्रदर्शन केले. या कार्यक्रमाला प्राध्यापक वर्ग आणि विद्यार्थिनी मोठ्या संख्येने उपस्थित होत्या.

FORTHCOMING



SNDT WOMEN'S UNIVERSITY, MUMBAI
DEPARTMENT OF SANSKRIT
&
CENTRAL HINDI DIRECTORATE
MINISTRY OF EDUCATION, NEW DELHI



Inauguration by
Hon. Shri Bhagat Singh Koshyari Ji
Chancellor, SNDT Women's University &
Governor of Maharashtra

Chief Guest- Prof. Bhushan Patwardhan, Chairman, NAAC
Keynote Speaker- Prof. O.P. Pandey, Editor- Rashtradharm &
Former Member Secretary, MSRVP, Ministry of HRD
Guest of Honour- Prof. M. M. Pathak- VC, SLBSS Central University

National Seminar
The Role of Indian Languages in Nation Building
on
Tuesday, 22nd March 2022
11:00 AM

Welcome by
Dr. Ujjwala Chakradeo, Vice Chancellor, SNDT Women's University
Prof. Ruby Ojha, Pro-Vice Chancellor, SNDT Women's University
Dr. Jitendra Kumar Tiwari, Head, Department of Sanskrit & Seminar Convenor

Venue:
Patkar Hall, SNDT Women's University Main Building, Churchgate, Mumbai.

All are requested to be seated in the Patkar hall before 10.30am.